مئی ۲۰۰۸ء

ماہنامہ

شعاع عمل لکھنؤ

قال اللہ تبارک و تعالیٰ

قد جاءکم من اللہ نور و کتاب مبین

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب

مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

May 2008

Lucknow

शुआ-ए-अमल

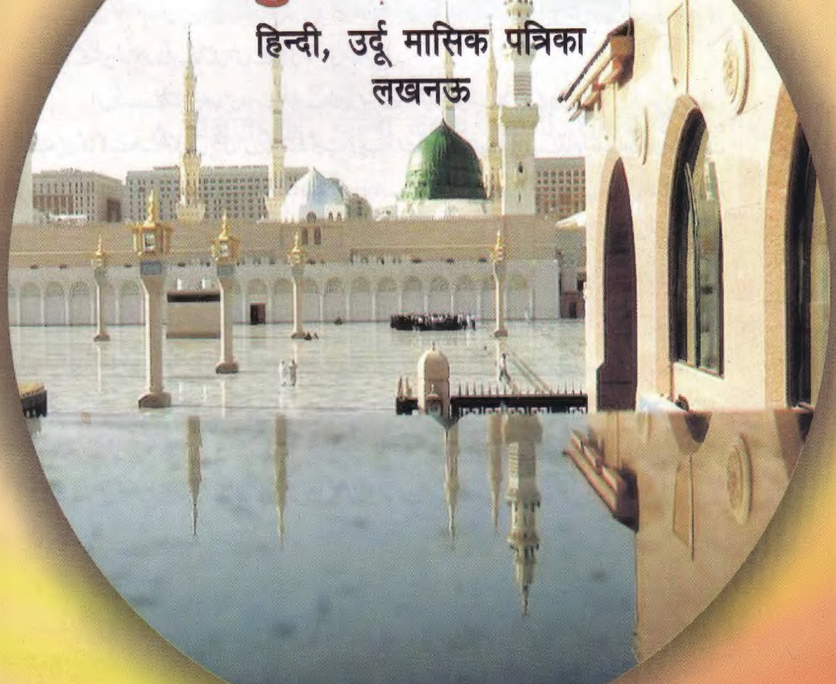

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष–4

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक – 11

माह मई – 2008 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु0 र0 आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़ीब नगरौरी

वार्षिक – 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0	मज़मून	लेखक	पेज न0
1–	हमारी रस्में और बन्दिशें	सय्यिदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह	3
2–	इमाम अली बिन हुसैन (अ0)	मोहतरमा तन्ज़ीम ज़हरा नक़वी कनीज़ अक्बरपुरी साहेबा	12
3–	मुख्य समाचार	इदारा	15

इमाम ज़ैनुलआबिदीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

1– जन्नत अल्लाह की इताअत करने वाले के लिए है। चाहे वह हब्शी ग़ुलाम हो। और जहन्न्म अल्लाह की नाफ़रमानी करने वाले के लिए है, चाहे वह क़ुरैशी सैय्यद हो।

2– बदक़िस्मत वह शख़्स है जो तजुर्बे और अक़्ल से फ़ायदा न हासिल कर सके।

3– किसी को उस वक़्त तक परहेज़गार न समझा जाएगा जब तक वह शक और शुब्हे वाले और हराम कामों से नहीं बचेगा।

4– अज़्मत उसी को हासिल होगी जो लोगों का मज़ाक़ न उड़ाए और उनको धोखा न दे।

हमारी रस्में और बन्दिशें

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली नक़ी नक़वी

रस्मों और पाबन्दियों का नशा

हमारी इस हैरानी और परेशानी की दास्तान बहुत लम्बी है। इस्लाम सादा और सन्जीदा उसूल व तालीमात लेकर आया था मगर इसकी यह सादगी कितने दिन क़ायम रही? बस उतने दिन कि जब तक पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ज़िन्दा रहे, उसके बाद कई वजहों से यह साफ और सादा तालीमात कुछ अन्जाने घरों के अन्दर महदूद रहीं हों तो हों मगर आम तौर पर इस्लामी तमद्दुन और तह्ज़ीब (कल्चर) पर दूसरे मुलकों के ''शाही'' समाज का असर पड़ा और आज जिसे ''मुसलमानों का कल्चर'' कहके उसकी बक़ा को हिन्दुस्तान में इस्लाम की बक़ा की तरह माना जाता है। यह वही मिलाजुला ''कल्चर'' है जो कई मुल्कों के समाज और तहज़ीब के असर से हिन्दुस्तानी मुसलमानों में पैदा हुआ है।

हिन्दुस्तान का इस्लाम उन मुक़द्दस रास्तों से आया हुआ नहीं जो सीधे तौर पर इस्लामी तालीमात के हामिल थे बल्कि यह ''सेकेण्ड हैन्डेड'' (Second Handed) इस्लाम है जिसमें पहले ही से वह सच्चाई और निखार बाक़ी नहीं रहा था, वह कुछ लिबास पहने हुए आया था और फिर मज़हब की शान्ति और सादा तबलीग़ से नहीं बल्कि ताक़त और ज़बरदस्ती के साथ हिन्दुस्तानी मुल्कों में फैला था इसलिए यहाँ के मुसलमानों ने आँख खोलकर अगर एक हाथ में देखा कुर्आन, तो दूसरे हाथ में देखी ख़ून में डूबी हुई तलवार जिस पर मज़हबी रिवायतों के मातहत जैसे यह एलान भी लिखा हुआ था कि– (अनुवाद) ''यानी बादशाह हाकिम हैं और उनकी इताअत ख़ुदा व रसूल की इताअत के बराबर है इसलिए यहाँ के मुसलमानों के दिल में ख़ुदा व रसूल के साथ ही साथ बड़ाई व हुकूमत का असर भी क़ायम हुआ।

फिर आपको मालूम है कि हिन्दुस्तान के हुक्मरान आम तौर से तुर्क और मुग़ल ख़ानदानों से थे जिनमें उनकी ख़ानदानी आदतें और रस्में जो तुरकिस्तान और ईरान में चलती थीं पूरी तरह उन पर अमल होता था, हिन्दुस्तान आकर सियासी ज़रूरतों की बिना पर उन्हें यहाँ के हुकूमत करने वालों से ताल्लुक़ात क़ायम करना पड़े और सुलतान जलालुद्दीन अकबर बादशाह ने जो अकबरे आज़म कहे जाते हैं, अपनी सियासत से अलग–अलग क़ौमों और मिल्लतों में शादियाँ करके उनकी लड़कियाँ लाने की भी ज़रूरत महसूस की। आगरा जाइये और फतहपूर सीकरी के शाही महलों में जोधाबाई के महल के साथ उसका इबादतख़ाना तक देख लीजिये। ज़ाहिर है कि रस्मों का ताल्लुक़ बहुत ज़्यादा औरतों के साथ है शाही महलों के अन्दर उन तरह–तरह के अनासिर के इकट्ठा होने से जो मिलावटी कल्चर की रस्में और आदतें चल सकती हैं उनका अन्दाज़ा बहुत आसान है। फिर कोई मामूली शख़्स हो तो उसके घर की तक़रीबों (Functions) की ख़बर भी उसके घर तक रह सकती है मगर बादशाह के यहाँ जो तक़रीब (Function) और रस्म हो उसमें सैकड़ों बल्कि हज़ारों आदमियों के शरीक होने का इम्कान है और लोगों की निगाह में बादशाहों के काम

पैरवी के क़ाबिल और इक़्तेदा के लायक़ हैं।

नतीजा ज़ाहिर है कि जो रस्म और तक़रीब बादशाह के यहाँ हुई, सरदारों और बड़े लोगों ने इसकी पैरवी की और इसके फैलाने में हिस्सा लिया। इनके असर से जो उनके मिलने वाले थे उन्होंने वही तरीक़े अपनाए। नतीजा यह हुआ कि वह चीज़ें आम तौर पर मुसलमानों में ज़िन्दगी का हिस्सा समझ ली गईं। मुमकिन है कि ख़ालिस मज़हबी फ़रीजें नज़रअन्दाज़ हो जाएँ मगर यह रस्में नज़रअन्दाज़ नहीं हो सकतीं। इसके बाद इन रस्मों को ताक़त दी तवह्हुमपरस्ती (अंधविश्वास) ने।

चूँकि तवह्हुमात (अंधविश्वास) हिन्दुस्तान में हमेशा से बहुत ज़्यादा पाये जाते हैं। अगर कभी किसी वजह से कोई रस्म न हुई और इत्तफाक़ से उसी साल कोई हादसा हो गया तो उसकी यह वजह बताई कि चूँकि वह रस्म नहीं अदा हुई थी इसलिए यह हादसा हुआ। इसका नतीजा यह हुआ कि पहले वह रस्में अगर सिर्फ तरजीही हैसियत (ख़ास) रखती थीं तो अब वह इतने लाज़िम समझी जाने लगीं कि जैसे ज़िन्दगी उन पर टिकी है।

आख़िर को वह सादे तरीक़े जो इस्लाम ने अपने मानने वालों के लिए बनाये थे इस दर्जा उन इज़ाफों और बढ़ोत्तरियों में घिर गये कि उनकी अस्ली सूरत छुप गई। पता भी नहीं चलता कि वह अस्ली चीज़ क्या थी जो हमारे लिए क़रार दी गई थी।

जिस वक़्त से इन्सान दुनिया में आया (बल्कि आया नहीं आने की तैय्यारी हुई) उस वक़्त से वह रस्मों की ज़ंजीरों में कस दिया गया और फिर वह खुद क़ैद से अज़ाद हो जाए मगर इन रस्मों की क़ैद से वह इसके बाद भी आज़ाद न होगा।

फिर अगर यह रस्में बिलकुल ख़ुश्क रस्में होतीं यानी उनमें रुपयों के ख़र्च करने की ज़रूरत न होती तो शायद इनकी वजह से कुछ नुक़सान न होता मगर उनमें हर एक रस्म शाही अन्दाज़ वाली है और हर एक रस्मों की कुछ ख़ास बातें हैं जो ख़र्च वाली हैं।

इसका नतीजा यह है कि मुख़तलिफ तक़रीबें जैसे शादी, बियाह, ख़त्ना और इससे छोटी बातें खीर चटाई, दूध बढ़ाई वग़ैरा भी इतनी मुश्किल हो गई हैं कि जब तक कुछ सामान न हो एक मामूली रस्म अदा नहीं हो सकती।

हालांकि इन रस्मों पर जब ख़याल किया जाता है तो कुछ बातें बिलकुल शरीअत के ख़िलाफ़ हैं और कुछ फ़ुजूल, बेकार और ग़लत तवह्हुमात (अंधविश्वास) की बुनियाद पर हैं और कुछ कम से कम माली हैसियत से नुक़सान पहुँचाने वाली हैं।

इन रस्मों की फेहरिस्त मुकम्मल तौर पर पेश नहीं की जा सकती क्योंकि यह ऐसी चीज़ है जो शहरों के एतेबार से ख़ानदानों के लेहाज़ से अलग–अलग है बल्कि एक ही ख़ानदान में किसी घराने में कोई रस्म है और किसी में कोई। फिर जिस तरह शरीअतें मन्सूख़ होती थीं उसी तरह रस्मों में भी बदलाव होता है जिसको कहते हैं ''रीत बदलना'' जैसे जिस तरह हवा पानी के बदलने से सेहत पर असर पड़ता है उसी तरह रीत बदलने से घर की भलाई और सलामती पर कोई ख़ास असर पड़ेगा। मगर फिर भी कुछ रस्मों को इशारे के लिए या समझाने के लिए बयान करूँगा।

जिस वक़्त से बच्चे की पैदाईश हुई, उस वक़्त से इस्लाम ने ख़ुदा का नाम याद दिलाने का इन्तिज़ाम किया। जैसे उसी वक़्त वह मक़सद इन्सान के सामने कर दिया जाए जिसके लिए वह दुनिया में आया है। यह हुक्म दिया गया कि बच्चे

के दाहिने कान में अज़ान कहो और बाएँ में इक़ामत कहो। उसको बच्चा चाहे समझे या न समझे मगर देखने वालों पर असर होगा और उन्हें ज़िन्दगी के फरीज़ों को पूरा करने का एहसास होगा मगर आपको मालूम है कि उस मौक़े पर आपके यहाँ क्या रस्म है? पीपा बजाना, तवा खटखटाना। देखने में तो एक मामूली बात है मगर देखिये इससे कैसा ज़हन बनता है।

ज़चा ख़ाने के दिनों में चाँदी सूँपी जाती है। मालूम नहीं यह रस्म किन–किन घरानों में है। यह चाँदनी का सूँपना ज़ख़्म में भी होता है और शायद चेचक में भी। इस रस्म की अस्ल बुनियाद मुशरिकाना अक़ीदे पर है। यह ख़याल कि चाँद का कोई असर है तो चाँदी को सूँपा जाए, देवताओं के अक़ीदे की बुनियाद पर है जैसे बीमारियों की झाड़फूँक। इसका कोई ताल्लुक़ तौहीद के साथ नही है। चूँकि अवाम का ज़हन इस पहलू से बिलकुल ख़ाली होता है इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि जो चाँदी सूँपे वह काफिर है मगर रस्म के बेकार होने में कोई शक नहीं। कुछ एहतियात वाले घरों की औरतें इसमें यह बदलाव करती है कि चाँदनी सूँपने में खुदा और रसूल (स0) और मासूम इमामों का भी नाम ले देती हैं मगर इसकी वजह से चाँदनी को सूँपने की तो कोई ठीक वजह पैदा नहीं हो सकती।

चेचक में लखनऊ से बाहर बहुत सी जगहों पर तो ''भवानी जी'' की नियाज़ दिलाई जाती है और उसे राज़ी करने की कोशिश की जाती है यह हरगिज़ इस्लाम में सही व ठीक नहीं है और जाएज़ नहीं है।

शादी बियाह के मामले में जब हम ग़ौर करते हैं तो मालूम होता है कि पुराने हिन्दू ख़यालात बहुत ज़्यादा हैं। हिन्दुओं में बहुत पुराने ज़माने में यह रस्म थी कि लड़की को जंग करके माले ग़नीमत के तौर पर ले जाया करते थे इस रस्म के निशान आज तक हमारे यहाँ की रस्मों में नज़र आते हैं। आप देखिये कि जिस वक़्त बराती दुल्हा के घर जाते हैं तो जब तक अक़्द न हो जाए उनके साथ मुख़ालिफाना तरीक़ा इख़्तियार किया जाता है कुछ खाना पानी यहाँ तक कि पान भी उन्हें नहीं दिया जायगा जब तक अक़्द न हो जाए। यह क्या है? यही कि अब तक जैसे यह एक फरीक़ (पार्टी) हैं और वह दूसरा फरीक़ (पार्टी) हैं। जब जंग जीत ली जाए तब दोनों एक होंगे।

फिर दुल्हा को घोड़े पर बिठाने की रस्म। चाहे उसको बैठना आता न हो। दो–दो आदमी इधर–उधर से पकड़े रहें मगर घोड़े पर होना ज़रूरी है। इसीलिए तो कि –जंग है– और इसमें शहसवारी की ज़रूरत है। अक्सर सर के ऊपर खिंची हुई तलवारों का साया भी होता है। इसका पूरा मुज़ाहेरा चौथी की रस्म में होता है। एक फरीक़ एक तरफ दूसरा फरीक़ दूसरी तरफ। वह दुल्हा वाले यह दुल्हन वाले। एक दूसरे पर हमले हो रहे हैं और वार जारी है। किसी ज़माने में तबर, तीर, नेज़े और तलवारें होते थे। आज मूली, गाजर, अमरूद, सेब वग़ैरा हैं चाहे चोट चपेट आए चाहे तकलीफ हो मगर कोई परवाह नहीं क्योंकि यह तो लड़ाई है और लड़ाई में लड्डू पेड़े नहीं बटते हैं।

शादी का लिबास जो दुल्हा हो पहुँचाया जाता है उसे देखिये। आपको मालूम होगा कि इसे हमारे आम समाज के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं है। फिर वह कोई ख़ूबसूरत और दिलकश लिबास भी नहीं बल्कि वह तो बजाए सजाने के और सूरत को बिगाड़ देता है मगर यह लिबास हमारे यहाँ बिलकुल हिन्दुओं की तरह जारी है।

कंगना और सेहरा शादी की ऐसी लाज़मी

चीज़ें हैं जो अलग नहीं हो सकते। सेहरा किसी हद तक दुल्हा के चेहरे पर अच्छा मालूम होता है। फूलों का है तो उसकी ख़ुशबू भी अच्छी लगने वाली हो सकती है मगर कंगने का क्या कहियेगा।

फिर यह देखिये कि यूँ तो लिबास हर एक का अलग है। कोई शेरवानी पहनता है, कोई अंगरखा, कोई अचकन, मगर शादी का पहनावा सबका एक ही होगा। मालूम होता है कि लिबास की यह रस्म किसी ख़ास असर की वजह से क़ायम और जारी है। और वह कुछ नहीं हो सकता सिवाए शाही जलाल व जबरूत के असर के जिसकी तशरीह पहले कर चुका हूँ।

कुछ रस्में ऐसी हैं जिनसे कभी–कभी तकलीफ हो जाती है जैसे लड़की को मांझे बिठाया जाना। यानी जब कुछ दिन अक़्द के रह जाएँगे तो कुछ ख़ास आदाब और शर्तों के साथ वह एक कोठरी के अन्दर बिठा दी जाएगी। इसके बाद उसे कपड़े बदलने के इजाज़त नहीं रोज़ उसके जिस्म पर उबटन मला जाएगा और उसकी मरम्मत होती रहेगी यहाँ तक कि अक़्द की तारीख़ आए। अब अगर इत्तेफाक़ से अक़्द की तारीख़ टल गई और कुछ दिन बाद तैय हुई तो जिस वक़्त तक अक़्द न हो उस वक़्त तक उसी तरह कोठरी में बैठी रहना चाहिए। अक़्द के बग़ैर मांझे से लड़की का उठाना एक बड़ी क़यामत की बात है जिसे मुश्किल से गवारा किया जाता है। इस मांझे बिठाने और रोज़ बटना मले जाने के बग़ैर कहा जाता है ''चेहरे पर नूर न आएगा''।

अब आप देखिये कि इस बीच में मुमकिन है शरई फराएज़ की वजह से उस लड़की के लिए नहाना ज़रूरी हो मगर क्या रस्मों की ज़रूरी पाबन्दी के मुक़ाबले में मज़हबी फरीज़े का कोई ख़याल किया जाएगा?

बरी, सान्चक़ एक ही तरह की चीज़ें हैं। मतलब अलग–अलग है कहीं सान्चक़ कही जाती है और कहीं बरी। इसकी शक्लें भी अलग–अलग हैं। मटकियाँ, उन पर सुर्ख़ कपड़ा चढ़ा हुआ, उनमें मछलियाँ टंगी हुई आख़िर इस शक्ल व सूरत की कोई ठीक वजह हो सकती है? हाँ सफर के वक़्त भी ''दही मछली'' कहना मुबारक समझा जाता है यहाँ भी मछलियों की शक्ल और मटकी के अन्दर दही। मुमकिन है इस मुनासिबत से हो कि लड़की का एक घर से दूसरे घर के तरफ सफर है।

कुछ लोगों ने बयान किया कि ''मछली'' हिन्दुओं का क़ौमी निशान है फिर तो मुसलमानों की शादियों में इस रस्म की बुनियाद सिवाए हिन्दुआना ज़हनियत की तासीर के और कुछ हो ही नहीं सकती।

अब आई अस्ल अक़्द की मंज़िल जिसका ज़रिया ईजाब व क़बूल है। इसमें महेर शरीअत की तरफ से ज़रूरी क़रार दिया गया है मगर हमारे यहाँ महेर उस शरई उसूल पर बाक़ी नहीं रहा जो उसको क़रार दिये जाने की वजह थी मेहर हक़ीक़त में एक मुतालबा था जो औरत की तरफ से मर्द के ज़िम्मे अदा करना वाजिब होता है मगर हमारी रस्मों और रवाज पर अमल करने में महेर सिर्फ एक नाम की चीज़ या दिखावे की बात या शान व हुकूमत के ज़ाहिर करने का लफ्ज़ी ज़रिया रह गया है। इससे ज़्यादा इसकी कोई अस्लियत बाक़ी नहीं रही इसका नतीजा यह है कि वह शख़्स जिसकी कोई हैसियत भी नहीं। जिस वक़्त शादी करने पर तैयार होता है अक़्द की महफिल में दुल्हा की हैसियत से मस्नद पर जलवागर होता है, तो उसके सामने दस लाख या कम से कम पचास हज़ार रुपये महेर पेश किया जाता है और वह इक़रारी तौर पर इस तरह सर हिला देता है कि मालूम होता है कि

उसके बाक्स (Box) में इतना रुपया उस वक़्त मौजूद है हालांकि अगर उस शख़्स से कहा जाए कि वह किसी शख़्स के नाम इतनी रक़म का प्रोनोट लिख दे तो वह तैयार न होगा और कहेगा कि मैं इतनी रक़म अदा कहाँ से कर सकता हूँ मगर महेर में उसको कोई बहाना नहीं। इसके माने यह है कि यह मेहर को अदा करना वाजिब नही समझता। एक लफ़्ज़ी बात है ''लाओ भाई पचास हज़ार नहीं, पचास लाख सही'' मैं सच कहता हूँ कि अगर उस शख़्स से बल्कि उस अक़्द की महफिल में बैठने वालों से पूछा जाए कि पचास हज़ार रुपया कितना होता है यानी रखा जाए तो उसके लिए कितनी जगह काफ़ी होगी (पचास लाख की बात नहीं) तो कोई यह सोंच नहीं सकता इसलिए उसने कोई मिक़दार ऐसी भी नहीं देखी है जो पचास हज़ार के क़रीब ही हो। मगर सिर्फ बातो में पचास हज़ार देने के लिए ख़ुशी के साथ तैयार हो जाएँगे। यह महेर तै कर दिया गया। इसके बाद? अभी तो शादी हो रही थी। इसके बाद चौथी चाले और ख़ुदा जाने क्या–क्या। चाँद तैय हैं यह चाँद यहाँ देखा जाए और यह वहाँ। इसकी तफसील बहुत लम्बी है। अब अगर औलाद की नौबत आई तो फिर न पूछिये। जो महीना गुज़रता है अपने साथ एक ख़ास रस्म लाता है। यहाँ तक तो ज़िन्दगी की रस्मों का ज़िक्र था। इन्तेहा है कि ख़ुदा न चाहे दुनिया से कोई उठ जाए तो इसके बाद भी रस्मों का सिलसिला नहीं टूटेगा जिसके लेहाज़ से मैं कहता हूँ कि जीना तो जीना मरना भी दुश्वार हो गया है। कितना बुरा मन्ज़र होता है जब जनाज़े के रखे होने की हालत में ही शोहदे शोर मचाना शुरु करते हैं उनकी आवाज़ें शादी के वक़्त शायद अच्छी लगती हों मगर ग़मी के मौक़े पर तो उनकी आवाज़ें बहुत ही नापसन्दीदा लगती हैं।

यह सभी रस्में आमतौर से ज़िन्दगी व मौत का हिस्सा बन गई हैं। क्या इन्हें बाक़ी रहना चाहिए?

यहाँ पर बहुत से लोग शरीअत का सवाल भी उठाते हैं कि क्या यह रस्में शरीअत के हिसाब से नाजाएज़ हैं?

मैं कहूँगा कि बेशक इन रस्मों में कुछ रस्में शरीअत के हिसाब से नाजाएज़ हैं। देखिये यह रस्म है कि दुल्हा के मेंहदी जो लगाती हैं वह बहनें होती हैं अगर सगी बहनें हों तो ठीक, लेकिन रिश्ते की बहनें उनका हाथ जिस्म से छूना शरीअत में नाजाएज़ है।

पर्दे के बाब में यह रस्म ही ग़लत तौर पर क़रार पाई है कि कुछ ख़ास तरह के रिश्तेदार पर्दे से अलग समझ लिये गये है शरीअत ने रिश्तेदारी की हदें तैय कर दी थीं। चचा, मामू, भाई, बाप वग़ैरा। हमने हर एक के मतलब को फैला दिया, हमारे यहाँ उनमें से हर एक में ''हैं'' और ''होते हैं'' का फर्क़ पैदा हुआ।

क्या मतलब? कि एक आदमी को आप फ़रमाते हैं ''बिना तकल्लुफ यह हमारे भाई हैं'' मैं अगर ज़रा हक़ीक़त जानने के लिए सवाल कर लूँ ''आपके भाई हैं?'' तो आप फरमा देंगे ''जी हाँ भाई होते हैं'' इस ''होते'' के माने यह हैं कि ''हैं'' नहीं। मतलब इसका यह है कि मेरे बाप या माँ की औलादें नहीं हैं मगर मेरे चचा के दूध शरीक भाई के बेटे हैं तो हमारे भाई हुए।

याद रखिये कि जहाँ तक बग़ैर किसी खीचा–तानी के ''भाई'', ''चचा'' वग़ैरा होने की मंज़िल है वहाँ तक शरीअत ने रिश्तेदारी का लेहाज़ किया मगर जहाँ से ''होते हैं'' की हदें शुरु हुईं वहाँ से शरीअत ने रिश्तेदारी का एतेबार नही किया है।

चचाज़ाद भाई, बहन आपस में एक दूसरे के ना महरम हैं इसलिए आपस में शादी हो

सकती है मगर हमारे यहाँ की अपनी बनाई हुई शरीअत (रस्म) के हिसाब से वह महरम क़रार दिये गये हैं इसलिए औरत उन सभी दूर के रिश्तेदारों के सामने होती है। अगरचे उस ज़माने में जबकि पर्दा कोई चीज़ ही नहीं समझा जा रहा है और बड़े–बड़े ऊँचे ख़ानदानों में बिलकुल उठाया जा रहा है।

मेरे इस बयान पर मज़ाक़ उड़ाया जाएगा मगर मुझे तो यहाँ उन लोगों से मतलब है जो शरीअत की पाबन्दी का दावा करते हैं और जहाँ पर वह बाक़ी समझा जाता है। मैं कहता हूँ कि वह पर्दा नहीं है जिसको शरीअत ने लाज़िम किया है। अब देखिये कि दुल्हा के जब मेंहदी लगाने में सगी बहनों के अलावा दूसरी तरह की बहनों का भी हाथ लगा तो यह शरीअत के ख़िलाफ हुआ या नहीं।

इसी तरह मैंने सुना है कि जिस वक़्त दुल्हा का अक़्द हो चुकता है और वह सलाम करने के लिए घर के अन्दर जाता है तो उस वक़्त पर्दे का कोई सवाल नहीं होता सब औरतें सामने होती हैं। मालूम होता है कि अक़्द तो एक के साथ हुआ मगर महरम सब हो गईं।

माँझे के बारे में कह चुका हूँ कि वह लड़की जो माँझे में बैठती है उसको कपड़े बदलना, नहाना सब मना है। क्या इसका कुछ सूरतों में शरीअत के अहकाम व फराएज़ के साथ टकराव नहीं होता।

कुछ रस्में ऐसी हैं कि उनके बारे में अगर आप उलमा से पूछिये तो वह नाजाएज़ नहीं कहेंगे। जैसे कंगना, सेहरा वग़ैरा। कंगना क्या चीज़ है। गोल शक्ल का एक लट्टू। उसको हाथ में हर वक़्त कोई बाँधे रहे तो क्या है। मगर इन छोटी–छोटी बातों की पाबन्दी से हमारी ज़िन्दगी की जो शक्ल तैयार हो रही है वह हमारे ख़ात्मे की शुरुआत है।

यह देखिये कि इन रस्मों का क्या नतीजा होता है। क्या आपको नहीं मालूम कि बहुत सी लड़कियाँ अक़्द के क़ाबिल हैं बल्कि जिनकी शादी का सिन गुज़र चुका है और वह बैठी हुई हैं। उनकी शादी सिर्फ इस वजह से नहीं होती कि रुपया नहीं शादी किस तरह हो। क्या इस्लाम ने शादी को जो तरीक़ा तैय किया है उसके लिए इतने रुपये की ज़रूरत है? हरगिज़ नहीं बल्कि यह वही हिन्दुवानी शादी है जिसके लिए रुपये का इन्तिज़ार किया जाता है। इससे कभी तो उन बेज़बान लड़कियों की जिस्मानी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है यानी वह तरह–तरह की बीमारियों का शिकार हो जाती हैं और कभी इज्तेमाई ज़िन्दगी को नुक़सान पहुँचता है यानी नस्ल ख़त्म हो जाती है और इन सबसे बढ़कर यह है कि कभी ज़िन्दगी की इज़्ज़त ख़त्म हो जाती है यानी वह ख़राब नतीजे पैदा होते हैं जो शराफत के दामन पर धब्बा ले आएं और इज़्ज़त की पेशानी को शर्म के पसीने में डुबो दें।

इसकी ज़िम्मेदारी किस पर है? उन माँ–बाप पर जो उनको शरीअत के हुक्म के ख़िलाफ बिठाए हुए हैं और यह बिठलाना किस बुनियाद पर है? उन ही रस्मों के पूरा करने पर जो चल निकली हैं।

जिस सूरत में कि लड़की बैठी नहीं रही बल्कि उसकी शादी की गई तो आप जानते हैं कि वह शादी होती किस तरह है? क़र्ज़ लेकर क़र्ज़ भी बिना सूद वाला तो मिलता नहीं। मिलेगा तो सूद वाला क़र्ज़ मिलेगा और वह किस से लिया जाएगा? उन ही लोगों से जिन के पास उन सूदी क़र्जों की बदौलत हमारी तमाम जाएदादें मुन्तक़िल हो चुकी हैं।

लाला साहब तशरीफ लाएंगे और चूँकि हम

ज़रूरत वाले हैं इसलिए मुँह माँगा सूद तैय करेंगे।

नतीजा सामने आया कि शादी तो हो गई और बड़ी धूम–धड़क्के से हुई और तारीफें भी ख़ूब हो रही हैं। मगर याद रखिये कि यह तारीफें करने वाले, उस वक़्त जब घर पर कुर्क़ी आएगी और मकान नीलाम होता होगा, यही लोग उस वक़्त बेवकूफ बनाते होंगे कि रुपया पास नहीं था तो इतनी शान व शौकत दिखाने की क्या ज़रूरत थी? सूद दर सूद में रहा सहा जो पास था वह सब चला गया। ख़ाना आबादी न हुई ख़ाना बर्बादी हो गई और फिर माली नुक़सान भी हुआ और पड़ोसियों ने मज़ाक़ भी उड़ाया।

महेर का जो उसूल आपने तैय किया है। उसका नतीजा क्या हुआ? नतीजा यह हुआ कि वह एक बेमतलब और हासिल न किये जाने वाली चीज़ हो गया शरीअत की तरफ से तैय किया हुआ महेर एक ज़रूरी फरीज़े की हैसियत रखता था मगर क़ानून ने उसको मन्सूख़ कर दिया। वहाँ हैसियत के हिसाब से दिलाया जाएगा। इससे एक शरीअत के उसूल की बेइज़्ज़ती हुई। मगर इसकी वजह क्या हुई। हमारा ग़लत तरीक़ा। हमने शरीअत के क़ानून को समझ में न आने वाली चीज़ का लिबास पहना दिया। जिसके बाद वह क़बूल करने के लायक़ ही न रहा।

जब आपसे पूछा जाता है कि यह पचास लाख या पचास हज़ार महेर किस लिये? तो जवाब मिलता है कि माँ का महेर यही था, नानी का यही था, परनानी का यही था इसलिए इसका भी यही महेर होगा लेकिन अगर पूछा जाए कि नानी या परनानी की जब शादी हुई थी तो घर पर हाथी बंधे हुए थे। अब तो एक छोटा सा घोड़ा भी नहीं है। उस ज़माने में सैकड़ों आदमियों की यहाँ से परवरिश होती थी। अब कभी–कभी ख़ुद घर में फ़ाक़े की नौबत आ जाती है। उस वक़्त हज़ारों रुपये का सामान मौजूद था अब बिछाने के लिए फर्श तक नहीं है। तो कहा जाएगा कि महेर तो उतना ही होगा।

बेहतर ''उतना ही होगा'' मगर इसका हासिल क्या है क्योंकि न वह दीन में मिलेगा न दुनिया में। दुनिया का हाल तो आपको मालूम हुआ कि वहाँ हैसियत के हिसाब से दिलवाया जाता है और दीन में भी यह ज़ाहिर है कि मुमकिन होने की शर्त है जब शौहर के पास होना मुमकिन ही नहीं तो आख़िरत की ज़िम्मेदारी भी कोई नहीं। मज़ा यह है कि अगर कभी बेचारा दुल्हा महेर के क़बूल करने में बहाना करता है और कहता है कि मैं इतना महेर नहीं दे सकता मुझमें ताक़त ही नहीं। तो उसे यह कहकर ख़ामोश कर दिया जाता है कि इस वक़्त न सही, मुमकिन तो है। ख़ुदा तो क़ादिर है। एक मुसलमान आदमी के सामने जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है तो वह बेबस हो जाता है इसके लिए उसके होंटों पर ख़ामोशी छा जाती है मगर इरादा तो फितरी (नेचरल) चीज़ है। क्या हमारे इन बातों के दांव से उसको इतने रुपये देने का इरादा हो सकता है?। हरगिज़ नहीं जबकि अपने हालात के हिसाब से वह उसके ख़याल से भी बहुत ऊपर है।

मेरे नज़दीक यह दलील ही बिलकुल ग़लत है। बात यह है कि दुनिया का निज़ाम (सिस्टम) अस्बाब पर क़ायम है और हर चीज़ के लिए एक सबब बताया गया है इस दुनिया का निज़ाम उन ही अस्बाब पर टिका हुआ है इन अस्बाब के ख़िलाफ सूरत अगर पैदा हो तो वह मोजिज़ा है। मगर मोजिज़ा की उम्मीद हर शख़्स को तो नहीं करनी चाहिए। मोजिज़ा ख़ास वक़्त में और ख़ास हालात की सूरत में सामने आता है अगर हर शख़्स के लिए ऐसा हो तो मोजिज़ा, मोजिज़ा ही न रहे वह हक़्क़ानियत का निशान ही बाक़ी न रहे

बल्कि मैं तो कहता हूँ कि नबी, रसूल और इमाम भी अपनी ज़िन्दगी में उन ही अस्बाब के पाबन्द थे जिनके हम पाबन्द हैं। उनके लिये भी मोजिज़ा ख़ास ज़रूरत के वक़्त सामने आता था था वरना न मोजिज़े की अहमियत बाक़ी रहती न उनकी ज़िन्दगी और सीरत हमारे लिये नमूना रहती।

हमको कोई हक़ नहीं है कि इस उम्मीद का कि हमारे लिए इन आम अस्बाबों के क़ानून को तोड़ दिया जाए और हमारे लिए मोजिज़ा ज़ाहिर हो। हज़रत ईसा (अ0) पानी पर चलते थे हम तो जब तक पासपोर्ट लेकर और टिकट ख़रीद कर जहाज़ पर न बैठें समुन्द्र का सफर नहीं कर सकते हम बग़ैर ज़रिये के एक क़दम आगे नहीं बढ़ा सकते। इस बारे में ख़ुदा पर भरोसा का सवाल ही पैदा नहीं हो सकता। क्योंकि भरोसे का दर्जा अपनी ताक़त के इस्तेमाल के बाद है। आपको मदरसतुल वाएज़ीन तशरीफ लाना था। घर में बैठे रहते, ख़ुदा की क़ुदरत में तो यह था कि वह आप तक यहाँ की तक़रीर को घर ही पर पहुँचा देता क्यों न आपने ख़ुदा पर भरोसा किया? मालूम होता है कि भरोसे का यह मतलब नहीं है। यह ख़याल करना ख़ुदा की हिकमत पर धब्बा लगाना है। अगर इसी तरह क़ानून की तोड़फोड़ हुआ करती तो दुनिया में कोई क़ानून और क़ायदा बाक़ी ही न होता।

मालूम हुआ कि हमारी ज़िन्दगी के आम निज़ाम में मुमकिन और ग़ैर मुमकिन का मतलब ''मुमकिने आदी'' और ''आदतन ग़ैर मुमकिन'' का है इस लेहाज़ से जब देखा जाए तो वह इन्सान जो रोटी का मुहताज हो उसे अपनी ज़िन्दगी में लाख दस लाख रुपया हासिल होना ग़ैर मुमकिन है। ख़ुदा की क़ुदरत में यह उसी तरह है जैसे हमारा हवा में उड़ना, समुन्द्र पर बग़ैर किसी जहाज़ और कश्ती के तैराकी जाने बिना चलना। वैसे ही दस लाख रुपये बैठे–बैठे यूँ ही मिल जाना।

फिर अगर हवा में उड़ने का इरादा आपको पैदा नहीं हो सकता, पानी की सतह पर रास्ता चलने का इरादा पैदा नहीं हो सकता क्योंकि आप इसे ना मुमकिन समझते हैं तो दस लाख रुपये देने का इरादा आपको कैसे पैदा होगा? समझ लीजिये कि यह बचकानी तसल्ली कि इस महेर को मन्जूर कर लो क्योंकि मुमकिन तो है? ख़ुदा क़ादिर तो है? बिलकुल धोखा और फरेब है।

महेर क्यों ज़्यादा रखा जाता है? ख़याल यह होता है कि महेर ज़्यादा होगा तो लड़की का दबाव शौहर पर होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि शौहर की हैसियत को देखते हुए आप ज़्यादा से ज़्यादा महेर ऐसा तैय कर दें जिसे वह अपनी उम्र भर में मुश्किल से अदा कर सके अगरचे वह भी सैय्यिद–ए–आलम (स0) के महेर के ख़िलाफ होगा मगर शरीअत ने उसकी पाबन्दी आप पर वाजिब नहीं की है इसलिए आप उससे ज़्यादा भी तैय कर सकते हैं मगर मेहरबानी करके इतना ज़्यादा नहीं जो हुदूद व ख़याल में न आए और जिसका होना किसी तरह नज़र न आता हो।

यह रस्में जो बन गईं हैं। ज़्यादातर जानने वाले और पढ़े लिखे लोग जो ऊँची सोंच होने का दावा करते हैं वह अपनी रौशन सोच दिखाने में इन से अलग होने का इज़हार करते है। मगर अमल की दुनिया में वह भी इन रस्मों के पाबन्द नज़र आते हैं। मुश्किल से कोई शख़्स इससे अलग होगा उन पर जब एतेराज़ किया जाता है तो वह कहते हैं कि औरतों से मजबूर हैं। कुछ बस नहीं चलता। इसके बारे कहता हूँ कि पहली बात यह कि औरतों का ज़हन बनाना ख़ुद मर्दों के ज़िम्मे है यानी शुरु ही से औरतों के ज़हन में ऐसे ख़यालात पैदा करने चाहिएं कि वह इन रस्मों पर

बेजा ज़िद ही न करें क्योंकि इन्सान अपने घर वालों के अख़लाक़ को ठीक करने का और तरबियत का ज़िम्मेदार है। ''तुम में से हर शख़्स अपने घर का हाकिम है और हर शख़्स से उसकी रिआया के बारे में सवाल होगा'' यानी पूछा जाएगा कि उसने कैसी तरबियत की। अच्छी बातों का हुक्म करना और बुरी बातों से रोकना तो एक आम फरीज़ा है सभी लोगों के बारे में हुक्म है कि अच्छे कामों की हिदायत करें और बुरी बातों से रोकें। बजाए इसके कि अपने ही लोग वह तो अपने साथ ख़ास ताल्लुक़ रखते हैं जिनकी हर तरह की निगरानी उस शख़्स पर ज़रूरी है इसलिए उसका फर्ज़ है कि वह शुरु ही से अच्छे ख़यालों की नसीहत करे। अगर आप शुरु से अपने घर वालों को इस तरह के क़िस्से सुनाते रहें और सैय्यिद–ए–आलम (स0) की सीरत उन्हें याद दिलाते रहें तो उनके ज़हन में वह ख़याल पैदा हो जाएंगे और वह वक़्त आने पर बेजा ज़िद के साथ आपकी परेशानी की वजह नहीं बनेंगे। दूसरी बात यह है कि अगर आप समझते हैं कि घर वालों की ज़िद बेजा है तो आप इतने नर्म और मुलायम क्यों हो जाते हैं कि उनके कहने में ज़रूर आ जाएं। आप अपनी ज़ाती बातों में तो अक्सर बराबरी से क़दम आगे बढ़ा देते हैं। इस्लाम ने शौहर और बीवी के बीच एक हद तक बराबरी के हुक़ूक़ बनाए हैं। औरत की हैसियत एक कनीज़ की सी हरगिज़ नहीं है। औरत पर शौहर की इताअत इस तरह वाजिब नहीं है जिस तरह माँ–बाप की इताअत औलाद पर यानी सिवाए वाजिब और हराम बातों के हर बात में उनके हुक्म को मानना ज़रूरी है। शौहर की इताअत बीवी पर इस तरह ग़ैर महदूद नहीं है बल्कि वह उन ही मामलों में जो बीवी होने के तहत दाख़िल हैं। और जो उसके रहने, आने जाने, से ताल्लुक़ रखते हैं। इसके सिवा किसी बात में इताअत वाजिब नहीं है। शौहर को बीवी से इस तरह की ख़िदमत लेने का हक़ नहीं है। जैसे खाना पकाना, कपड़े सीना, झाडू देना बल्कि पानी पिलाना और खाना देना यह चीज़ें औरतों के ज़िम्मे वाजिब नहीं हैं। बेशक इन बातों को मुहब्बत के उसूल के तहत होना चाहिए यह तो इन्तिज़ाम की हैसियत से काम की ज़रूरत है कि अगर शौहर कारोबार, मेहनत, मज़दूरी या तिजारत के सिलसिले में बाहर का काम अन्जाम देता है तो औरत घर के अन्दर का काम अन्जाम दे शौहर की क्या बात एक घर में माँ और बेटे हों। बेटा रोज़ी कमाने में बाहर रहता है तो माँ का इन्तिज़ामी फर्ज़ है कि वह खाना पकाकर रखे मगर क्या इसके माने यह हुए कि माँ पर बेटे की इताअत वाजिब हो गई। इसी तरह एक घर में भाई और बहन हों तो वहाँ यही सूरत होगी। इसी तरह समझ लीजिये शौहर और बीवी को। मगर इसके माने यह नहीं हैं कि आपकी हुकूमत क़ायम हो गई अगर कभी वक़्त पर खाना तैयार न हुआ तो माथे पर बल आ गये। अगर सालन बदमज़ा हुआ तो प्याला उठाकर आंगन में फेंक दिया। यह बातें वह हैं जिनमें लोग बराबरी से आगे क़दम बढ़ा देते हैं मगर वह बातें जिनमें औरतों के कहने पर नहीं चलना चाहिए उनमें उनके मुरीद बन जाते हैं। क़ुर्आन में तो यह है कि यानी ''मर्द औरतों के ज़िम्मेदार हैं'' मगर यहाँ मामला उलटा हो जाता है यानी ''औरतें मर्दों पर हुक्म चलाने वाली होती हैं'' अगर आप हक़ीक़त में रस्मों के नुक़सान का एहसास रखते हैं तो आपको अपनी बात पर क़ायम रहना चाहिए बेजा ज़िद को ठुकरा देना चाहिए और नख़रे उठाने के उसूल को बर्बाद कर देना चाहिए जबकि आप समझते हैं कि इससे आपकी क़ौमी ज़िन्दगी बर्बाद हो रही है। **(बाक़ी आइन्दा)**

इबादत करने वालों की ज़ीनत

इमाम अली बिन हुसैन (अ0)

मोहतरमा तन्ज़ीम ज़हरा नक़वी कनीज़ अक्बरपुरी साहेबा

मासूमीन (अ0) अगरचे हमारे ही जैसे इन्सान हैं जैसा कि कुर्आन मजीद की आयते करीमा इस बात की गवाही देती हैः

अनुवाद– ''ऐ नबी! कह दो कि मैं तुम्हारे ही जैसा इन्सान हूँ।'' (सूरा कहफ आयत 110)

लेकिन आलमे अबदी व अज़ली ने उन्हें जिन कमालात से नवाज़ा है किसी और को नहीं नवाज़ा। इसलिए कि मासूम और पाकीज़ा होने के बावजूद खुद को ''ग़नीए मुतलक़'' (अल्लाह) के सामने फक़ीर, मिस्कीन पेश करते हैं उनके बाकमाल होने की सबसे ज़्यादा खुली दलील भी यही है। अल्लाह के होने का इस हद तक यक़ीन है कि फरमाते हैंः

''हम उस ख़ुदा की इबादत नही करते जिसको खुली आँखों से न देखा हो।'' अल्लाह के बड़े दरबार में बेबसी का इज़हार इतना ज़्यादा है कि पैरों में सूजन और अल्लाह के डर से बेद की तरह काँपते हैं।

जब वुज़ू का पानी सामने आता है तो चेहरे का रंग बदल जाता है और फरमाते हैंः मुझे रब्बुलआलमीन के दरबार में हाज़री देनी है।

ख़ुशु व ख़ुज़ूअ् में इतनी सख़्ती है कि बच्चा कुँएं में गिर गया और इमाम अली बिन हुसैन (अ0) परवरदिगार के ज़िक्र में लगे हुए हैं और हंगामे के बाद भी आपको पता नहीं चल सका लेकिन नमाज़ से फुर्सत पाने के बाद सही सलामत बच्चे को निकाल लिया।

जहन्नम की आग का डर इतना है कि घर में आग लग गई मगर इमाम सज्जाद (अ0) नमाज़ में लगे रहे लोगों ने कहा क्यों आपने कोई ध्यान नही दिया? तो जवाब में फरमायाः घर की आग तो पड़ोसी भी बुझा सकते हैं लेकिन मैं जहन्नम की आग को बुझाने में लगा हुआ था।

इन्हीं सारी ख़ूबियों को देखते हुए आपको ''इमाम ज़ैनुलआबिदीन'' कहा गया और क़यामत के दिन आपको इसी लक़ब से पुकारा जायगा।

इबादत से जुड़ी चीज़ ''दुआ'' है और दुआ ऐसी इबादत है जो बन्दे और माबूद के बीच ताल्लुक़ का ज़रिया है।

दुनिया का कौन सा इन्सान है जो मुहताज नहीं है और किसी से माँगता नहीं है लेकिन हक़ीक़त में इबादत का नमूना है वह इन्सान जो सिर्फ़ उम्मीद रखता है जो ''ग़नी हमीद'' है। जो पहचान के साथ दुआ करता है। वह दुआ जो पहचान के बिना सिर्फ आदत और तजुरबे की वजह से हो उसे हरगिज़ इबादत नहीं कहा जा सकता।

मासूम इमाम और दूसरे अल्लाह के वली जहाँ अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करते हैं वहीं रोज़ी तलाश करके दूसरे रास्तों से माल हासिल करते हैं और उन्हें ज़रूरतमन्दों को दे देते हैं, दूसरों के साथ एहसान करना, यतीमों की सरपरस्ती और मख़्लूक़ की ख़िदमत आप लोगों की ज़िन्दगी का ख़ास काम था।

मासूमों ने ज़िन्दगी के सभी पहलुओं को देखते हुए सबक़ दिये हैं। उन्होंने हमें यह तरीक़ा

भी सिखाया है कि एक मुहताज बन्दे को ख़ालिक़ और सारे जहान के बादशाह के दरबार में किस तरह हाज़िर होना चाहिए। एक बेचारे को ''ग़नी–ए–मुतलक़'' (ख़ुदा) से किस तरह सवाल करना चाहिए।

हक़ीक़त में मासूमीन (अ0) की दुआओं से हर इन्सान आसानी से उसको पहचानने का सबक़ ले सकता है। आप की दुआओं में इल्म व हिक्मत की मानवियत नज़र आती है। हक़ीक़त में आप लोगों की दुआओं के समझदारी भरे जुमले और कल्मे की तारीफ करना सूरज को चिराग़ दिखाने के जैसा काम है। उनकी फसाहत व बलाग़त की मिसाल ही नहीं है।

यूँ तो सभी नबियों और अल्लाह के वलियों ने ख़ुदा के दरबार में दुआ की है लेकिन समझदार लोगों के बयान के मुताबिक़ उस ख़ुदा से राज़ो नियाज़ में इमाम ज़ैनुलआबिदीन सैय्यदुस्साजिदीन हज़रत अली बिन हुसैन (अ0) आगे–आगे हैं। आपकी दुआओं की मिसाल दूसरे इमामों के यहाँ भी नही मिलती मगर इसकी वजह यह नहीं है कि उन्होंने मुनाजात करने में कोई कसर बाक़ी रखी बल्कि हर एक की तबलीग़ का तरीक़ा अलग–अलग रहा है।

इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) की ज़िन्दगी में इस अमल की ज़्यादती की वजह यह है कि ''दुआ'' को आपने तबलीग़ का ज़रिया बनाया है।

ख़ास कर वाक़ेए कर्बला के बाद जब आपने देखा, समाज बिगड़ गया है, दुनिया की चाहत, ऐश परस्ती, सियासी, अख़लाक़ी और इजतेमाई फितना व फसाद ज़ोर पकड़ रहे हैं तोः–

आपने मौक़े को ग़नीमत जाना और इन हालात से उस तरह फायदा उठाया जिस तरह उसका हक़ था, ताकि अपने सही और हक़ीक़ी अक़ीदों को लोगों के ज़हनों तक पहुँचा सकें फिर इस तरह से आपने लोगों के बीच दुआओं के ज़रिये इस्लाम की तबलीग़ का काम किया।

आपके अलफाज़ इतने नपेतुले, असरदार और इरादे और मक़सद इतने मिलते जुलते थे कि ज़रूरतमन्द आपकी दुआओं पर पूरा भरोसा करते थे और करते हैं।

आपके एक शार्गिद ने आपकी दुआ की क़बूलियत के बारे में चैलेन्ज करते हुए कहा किः ''अगर क़बूल न हो तो दुआ करने वाला मुझ पर लानत करने का हक़ रखता है।''

''सहीफए कामेला'' आपकी दुआओं का वह मजमुआ है जिसके पढ़ने से साफ दिखता है कि आपकी दुआओं का फ़लसफ़ा वह नहीं था जो आम तौर से दुआ माँगने वालों का होता है। आपकी दुआओं का मक़सद सिर्फ ग़रज़ पूरी होना नही था बल्कि रब की बड़ाई और बन्दे की कमतरी का ख़ास तौर से एहसास था।

बेशक इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) की दुआ ईमान वालों के लिए किरदार की तामीर और ज़ालिमों के ख़िलाफ एहतेजाज का बहुत अच्छा तरीक़ा है। आपने अपनी दुआओं से वही पैग़ाम पहुँचाया है जो दूसरे मासूमों ने खुतबों से पहुँचाया है।

वाक़ेए कर्बला की बाद आपने महसूस किया कि इस्लामी इंक़ेलाब की कामियाबी के लिए 72 शहीदों का ख़ून काफी है अब और कुर्बानी की ज़रूरत नहीं है। और ऐसे वक़्त में एक नया तरीक़ा इस्तेमाल करके लोगों के दिलों को पलटना है। चूँकि इमाम थे, इमाम ख़ामोश नहीं रह सकता इसलिए आप दुआ के अन्दाज़ में रिसालत के पैग़ाम को फैलाने में लग गये।

नीचे दिये हुए वह जुमले जो आपने अपने एक सहाबी अबुहम्ज़ा सुमाली को तालीम दिये हैं उनके तज़किरे से आपकी दुआओं की अहमियत और मक़सद को समझा जा सकता है।

फरमाते हैं:

ऐ ख़ुदा! मुझे अपने गुस्से से तम्बीह न करना, हमें इतनी छूट न देना कि हम धोखे में पड़ जाएं, ऐ ख़ुदा हमारे पास नेकी कहाँ से आयगी जब तू इसका मरकज़ है.........हम ने तो तेरे ही ज़रिये तेरी पहचान हासिल की है।''

फिर इमाम ख़ुदा की तारीफ करते हुए फरमाते हैं:

''तू वह ख़ुदा है जो पुकारने पर जवाब दे देता है। और बिना माँगे दे देने वाला है।''

तारीफ है उस ख़ुदा की जो बिना सिफारिश के दिल के राज़ को सुन लेता है और ज़रूरत पूरी करता है। शुक्र है उस परवरदिगार का जिसने अपनी पनाह में रखकर इज़्ज़त दी है वरना लोग ज़लील कर देते, वह ग़नी और बेनियाज़ होने के बाद भी हमसे मुहब्बत करता है, और गुनाहगार होने के बाद भी बर्दाश्त करता है।

ऐ ख़ुदा! मैं अपने सारे मक़सदों के साथ सिर्फ एक दुआ के सहारे तेरी तरफ आया हूँ जबकि तेरे अकेले और ला शरीक होने का यक़ीन भी रखता हूँ।

परवरदिगार! मैं तुझसे उन चीज़ो का सवाल करता हूँ जिसका हक़दार नहीं हूँ लेकिन तू तक़्वे वाला और मग़फिरत वाला है, मुझे माफ कर दे और निगाहे करम से वह लिबास अता कर जिससे तमाम बुराइयाँ छुप जाएं तू, तो पहले से एहसान करने वाला है। बहुत बड़ा माफ करने वाला है।

माबूद! तू तो इतना मेहरबान है कि जो माँगते नहीं उन्हें भी अता करता है मैं तो सवाल कर रहा हूँ, और मुझे यक़ीन भी है कि पैदा करना और हुक्म देना सब तेरी क़ुदरत में है। तू बरकत वाला और सारे जहानों का रब है।

ऐ नेकों के परवरदिगार! मैं तुझ से वह सब माँग रहा हूँ जो तेरे नेक बन्दे माँगते हैं क्योंकि तू बेहतरीन और बहुत सख़ी देने वाला है। मेरी दुआ को मेरी जान, घर वाले, मेरे माँ–बाप, मेरी औलाद और मेरे भाइयों के सिलसिले में क़बूल फरमाना। ऐ रज़्ज़ाक़! ऐ रहमान!

मुझे रोज़ी में बढ़ोत्तरी, वतन में अम्न व अमान, माल और औलाद में बढ़ोत्तरी, नेमतें बाक़ी रहने वाली, जिस्म में सेहत, बदन में ताक़त, दीन में सलामती और ख़ुदा व रसूल की इताअत का हौसला फरमा।

ऐ ग़फ्फार व ग़फ़ूर! तेरी इज़्ज़त की क़सम अगर तूने मुझसे गुनाहों का हिसाब किया तो मैं तुझसे माफी का सवाल करूँगा और अगर तूने मेरी ज़िल्लत के बारे में पूछा तो मैं तेरी मेहरबानी के बारे में सवाल करूँगा, और अगर तूने मुझे बुरे कामों की बुनियाद पर जहन्नम में डाल दिया तो मैं सब कहूँगा कि मैं ख़ुदा को मान्ने वाला हूँ।

मेरे परवरदिगार, मेरे सरदार! अगर तूने सिर्फ वलियों को माफ किया तो गुनाहगार कहाँ जाएंगे? परवरदिगार! तुझसे मेरा सवाल यह है कि मेरे दिल में अपनी मुहब्बत और अपना डर भर दे, मुझे अपनी किताब की तस्दीक़, अपने ऊपर ईमान का शौक़ दे दे।

ऐ जलाल और इज़्ज़त वाले! मेरी नज़र में अपनी मुलाक़ात को महबूब बना दे और उस मुलाक़ात में राहत, वुस्अत और मेहरबानी व करम पैदा कर दे।

ऐ परवरदिगार! मुझे पिछले नेक लोगों और आने वाले नेक बन्दों में से शुमार करना।

मेरे लिये रहमत के ख़ज़ानों को खोल दे मुझ पर ऐसी मेहरबानी फरमा जिसके बाद अज़ाब न हो दुनिया व आख़िरत में अपनी मेहरबानी से हलाल और पाक रोज़ी अता कर।

ऐ जन्नत देने वाले और मुआफ करने वाले तेरे सिवा कोई क़ुदरत वाला नहीं है।

□□□

इदारा

मुख्य समाचार

ईरान दुनिया के ताक़तवर मुल्कों की फेहरिस्त में शामिलः महमूद अहमदी नेजाद

ईरान के सदर महमूद अहमदी नेजाद ने एलान किया है कि ईरान दुनिया के ताक़तवर मुल्कों की सफ में शामिल है क्योंकि इसकी फ़िज़ाइया ने मग़रिबी मुल्कों के साथ बढ़ती हुई कशीदगी के वक़्त में अपनी महारत में कमाल हासिल कर लिया है। इस्लामी जम्हूरी ईरान के सालाना यौमे अफ़वाज के मौक़े पर तेहरान में फ़ौजी परेड से ख़िताब करते हुए उन्होंने कहा हथियारबन्द फौजों की तमाम शाखें ईरानी सरज़मीन पर किसी हमले का पूरी ताक़त से जवाब देंगी। उन्होंने फख़्रिया अन्दाज़ में कहा कि कोई भी ईरान के ख़िलाफ़ कारवाई की हिम्मत नहीं कर सकता। फौज, इन्क़ेलाबी मुहाफ़िज़ और बसीज मलेशिया मुकम्मल कुव्वत व हमआहन्गी से मुज़ाहेमत करते हुए मामूली सी जारहियत का भी भरपूर जवाब देंगे। सदर अहमदी नेजाद ने कहा ग़ैरमुल्की शैतानी फौजें मश्रिक़े वुस्ता के तवानाई के ज़ख़ीरों पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश में नाकाम हो चुकी हैं। मश्रिक़े वुस्ता के मुल्क ग़ैर मुल्की फौज़ों के बिना भी अपनी हिफ़ाज़त कर सकते हैं। उन्होंने कहा जाबिर, मग़रूर और शैतानी ताक़तों ने मश्कूक जवाज़ इस्तेमाल करके दुनिया के तवानाई के ज़ख़ीरों पर क़ब्ज़ा करने की मन्सूबाबन्दी की। इसी मक़सद के तहत इन ताक़तों ने अपनी फौजें मश्रिक़े वुस्ता में भेजीं लेकिन वो अपने अज़ाएम में नाकाम हो चुकी हैं। सदर ने कहा ईरान ख़ित्ते में ग़ैर मुल्की फौजों की मौजूदगी के बिना अमन व सलामती के लिए अपने पड़ोसी मुल्कों के साथ है।

उन्होंने कहा कि ईरानी क़ौम इस मक़ाम पर पहुँच चुकी है कि कोई भी मुल्क उस पर हमले की हिम्मत नहीं कर सकता। ईरानी सदर ने कहा उनका मुल्क हवाई जहाज़, टैंकों और दूसरे हथियारों के साथ अपनी ज़्यादातर फौजी ज़रूरतों को मक़ामी तौर पर पूरी करने के सलाहियत रखता है। उनमें से कुछ हथियारों का मुज़ाहेरा सालाना फौजी परेड में किया गया।

ईसाराईल पर हमलों में अमरीकी अस्लहे का इस्तेमाल

इस्राईली अख़बार ''यरोश्लम पोस्ट'' ने इन्केशाफ किया है कि इस्लामी तहरीक मुज़ाहमत (हमास) सैहयूनी फौज से लड़ाई के दौरान अमरीकी बनावट का अस्लहा इस्तेमाल करी रही है। मिडिल ईस्ट सेन्टर की रिपोर्ट के मुताबिक़ इस्राईल के ख़िलाफ बरसरे पैकार माहिर जंगजुओं की तादाद दो हज़ार से भी ज़्यादा है। जिन्हें हमास ने जंगी तरबियत और अस्लहा फराहम कर रखा है। इसके अलावा हमास के पास पन्द्रह हज़ार जंगजू तैयार हालत में मौजूद हैं जिन्हें चार हिस्सों में तक़सीम किया गया है उन्हें मैदाने जंग में उतारा गया है। हमास के ज़ेरे इस्तेमाल यह अस्लहा गुज़िश्ता बरस जून में फतह के ग़ज़्ज़ा से फ़रार के बाद क़ब्ज़े में लिया गया था। हमास का दावा है कि उसने एक हज़ार एम16 आटोगनें क़ब्ज़े में ली थीं।

दुनिया के ज़ालिमाना हालात तबदील होने चाहिएंः ईरानी सदर

इस्लामी जमहूरी ईरान के सदर डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने मलावी के वज़ीरे ख़ारजा से मुलाक़ात में दुनिया के ज़ालिमाना हालात तब्दील करने के लिए कोशिश करने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। ख़बरों के मुताबिक़ सदर मम्लकत ने आज तेहरान में अफ़्रीक़ी मुल्क मलावी के वज़ीर ख़ारजा जोएस बेन्डा से मुलाक़ात में दोस्त और बिरादर मुल्कों के साथ तआवुन की ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए कहा कि सबको दुनिया के ज़ालिमाना हालात तब्दीन करने की कोशश करनी चाहिए। उन्होंने इस तरह मलावी के साथ दो तरफा तआवुन को फ़रोग़ देने के लिए बेपनाह गुन्जाइश और मौक़े की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि तेहरान ज़िराअत, सेहत और तिब के शोबों समेत मुख़तलिफ़ क़िस्म के मैदानों में मलावी को अपने बेशक़ीमत तजरबात मुन्तक़िल करने के लिए तैयार है। मलावी के वज़ीर ख़ारजा जोएस बेन्डा ने भी इस मुलाक़ात में अफ़्रीक़ी मुल्कों के साथ ताल्लुक़ात क़ायम करने और उन्हें फ़रोग़ देने में इस्लामी जमहूरी ईरान की कोशिशों की तारीफ करते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि मलावी मुख़तलिफ मैदानों में ईरान के बेशक़ीमती तजरबात से फ़ायदा उठाना चाहता है।

ख़लीजी इलाक़े को बाहरी शैतानी ताक़तों की ज़रूरत नहीं: डा० अहमदी नेजाद

ईरान के सदर महमूद अहमदी नेजाद ने कहा है कि शैतानी बाहरी ताक़तें मग़रिबी एशिया के तवानाई के वसाए पर तसल्लुत जमाने की अपनी कोशिश में नाकाम हो गईं और यह ताक़तें ईरान को धमकी देने की जसारत नहीं कर सकतीं। अहमदी नेजाद ने एक तक़रीब से ख़िताब करते हुए कहा कि ईरान अमरीका और दूसरी बाहरी ताक़तों के बिना ख़ुद की सलामती के मसाएल से निपट सकता है। सदर ईरान ने सालाना तक़रीब में कहा कि हमने देखा है कि जाबिर, घमण्डी और शौतानी ताक़तों ने दुनिया के तवानाई के वसाएल पर तसल्लुत हासिल करने की ग़रज़ से मुश्तबा बहाने इस्तेमाल करने का मन्सूबा बनाया और इस तरह से अपनी फौजों को हमारे इलाक़े में ला खड़ा किया। उन्होंने कहा कि आज वह लोग नाकाम हो गये हैं।

अहमदी नेजाद का यह ख़िताब टेलीवीज़न पर नश्र किया गया जबकि उनकी तक़रीर से कुछ ही देर पहले लड़ाका जहाज़ों और हेलीकाप्टरों ने फ़िज़ा में परवाज़ की और तेहरान के जुनूब में में क़ायमकरदा शहनशीन के सामने ईरानी फौज के सिपाहियों ने मार्चपास्ट किया। इस परेड में लारियों पर सवार कई मीज़ाइलों और दूसरे अस्लहों को भी पेश किया गया लेकिन उन हथियारों में शहाब–3 मीज़ाईल शामिल नहीं था। आहदेदारों ने कहा कि यह मीज़ाईल ईरान का सबसे तवील फासले पर ज़र्ब लगाने वाला मीज़ाईल है जो 2 हज़ार किलोमीटर दूर निशाने पर ज़र्ब लगाने की सलाहियत रखता है। सदर ईरान ने कहा कि उनका मुल्क इस सतह पर पहुँच गया है जहाँ दुनिया की कोई भी ताक़त उसे धमकाने के जुराअत नहीं कर सकती। उन्होंने यह भी कहा कि ईरान किसी भी हमले का ताक़तवर जवाब देगा।

ईरान अपना पुरअम्न जौहरी प्रोग्राम जारी रखेगा: अली अकबर हाशमी रफ़्संजानी

ईरान के रईस मजमए तश्ख़ीस मस्लहते निज़ाम के सदर अली अकबर हाशमी रफ्संजानी ने कहा है कि ईरान अपना पुरअम्न जौहरी प्रोग्राम जारी रखेगा और जौहरी प्रोग्राम के हवाले से ईरान मुज़ाकेरात की बहाली के लिए तैयार है। ईरानी ज़राए अब्लाग़ के मुताबिक़ तेहरान यूनिवर्सिटी में ख़िताब करते हुए उन्होंने कहा ईरान जौहरी तवानाई की बैनुलअक़वामी ऐजेन्सी आई०ए०ई०ए० के दायर–ए–कार के अन्दर रहते हुए जौहरी सरगर्मियों को आगे बढ़ा रहा है। हमारा जौहरी प्रोग्राम पुरअम्न मक़ासिद के लिए है। उन्होंने कहा कि ईरानी हुकूमत पुरअम्न जौहरी प्रोग्राम को आगे बढ़ाने के मौक़िफ़ से पीछे नहीं हटती है और इस हवाले से हम पुरअज़्म हैं।

उन्होंने कहा कि मग़रिबी मुल्कों ने ईरान के ख़िलाफ अपनी कोशिशें जारी रखी हुई हैं, मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि ख़ित्ता और दुनिया में माहौल को ख़राब करने की कोशिशों को कामियाबी नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि इराक़ में अम्न और इस्तेहकाम के लिए ईरान भरपूर कोशिश कर रहा है ताहम इराक़ में क़यामे अम्न के लिए हमारी कोशिशों के रास्ते में रुकावटें पैदा की जा रही हैं। इराक़ के अवाम का इत्तेफ़ाक़ व इत्तेहाद और इराक़ की सालमियत का तहफ़्फ़ुज़ हमारी औव्वलीन तरजीह है।